SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विद्यार्थियों के गृह–वातावरण एवं व्यक्तित्व का उनके विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

वीर प्रकाश सिंह, पीएच–डी, भूगोल विभाग
पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, धार, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
वीर प्रकाश सिंह, पीएच–डी
E-mail : drvpsingh2019@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/01/2026
Revised on : 15/03/2026
Accepted on : 24/03/2026
Overall Similarity : 00% on 16/03/2026

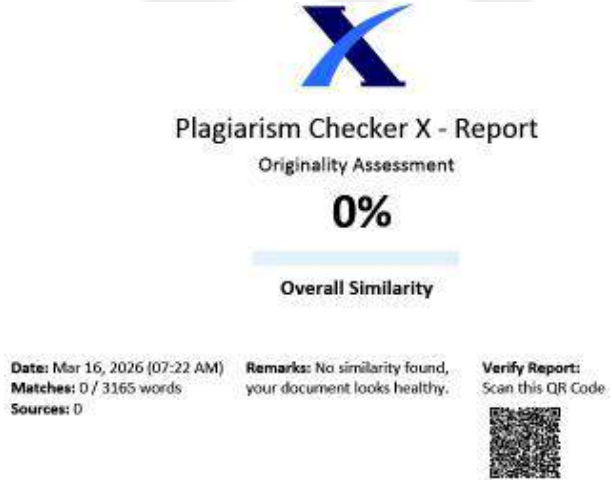

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के गृह–वातावरण एवं व्यक्तित्व का उनके विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना है। उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अप्रयोगात्मक शोध विधि के अंतर्गत मात्रात्मक शोध के अधीन वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है। शोध हेतु कुल 800 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। शोधकर्ता ने तीन मानकीकृत शोध उपकरणों गृह वातावरण सूची, संरचित व्यक्तित्व अनुसूची' तथा 'विद्यार्थी समायोजन अनुसूची' का उपयोग किया गया है। शोध में यह पाया कि विद्यार्थियों का गृह–वातावरण उनके विद्यालय समायोजन से सीधे तौर पर सम्बंधित है। घर का अच्छा वातावरण विद्यार्थियों को विद्यालय में भी बेहतर समायोजन का तरीका सिखाता हैं। विद्यार्थियों का व्यक्तित्व उनके विद्यालयी समायोजन पर प्रभावित कर रहा है। सिद्धांततः, बहिर्मुखी विद्यार्थी विद्यालयों में समायोजित हो जाते हैं, जबकि अंतर्मुखी नहीं इसलिए यहाँ पर भी इसी प्रकार का निष्कर्ष निकलता है। विद्यार्थियों का गृह–वातावरण उनके विद्यालयी समायोजन को प्रभावित कर रहा है अर्थात् माता–पिता व अन्य सदस्यों का आपसी व्यवहार विद्यार्थिओं के व्यवहार को भी प्रभावित कर रहा है। विद्यार्थियों का व्यक्तित्व उनके विद्यालयी समायोजन को प्रभावित नहीं कर रहा है अर्थात् दोनों प्रकार के विद्यार्थी विद्यालयी परिस्थितियों को एक प्रकार से देखते हैं।

मुख्य शब्द

उच्चतर माध्यमिक, गृह–वातावरण, विद्यालयी समायोजन, विद्यालयी समायोजन.

प्रस्तावना

"शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान के साथ–साथ अच्छे संस्कार देना भी है।"

लाल बहादुर शास्त्री

मनुष्य इस अनोखी धरा की एक सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसका जन्म अदभुत शक्ति के साथ होता है। शिक्षा ही ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य की उन शक्तियों का विकास, ज्ञान, सूचना, तर्क, चिन्तन मनन एवं व्यवहार में परिवर्तन के साथ उसका चहुंमुखी विकास किया जा सकता है एवं उसे विनम्र, सुसंस्कृत तथा समर्थ नागरिक के रूप में तैयार किया जाता है। यह कर्तव्य उसके जन्म लेने के पश्चात ही उसके गृह सदस्यों के द्वारा अनौपचारिक रूप से तत्पश्चात औपचारिक संस्थाओं में विधिवत भेजकर आधिकारिक व्यवस्थानुसार आरम्भ कर दिया जाता है। औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से उसे बहुत कुछ निर्देशित किया जाता है। यह अधिगम प्रक्रिया औपचारिक संस्थाओं को छोड़ने के उपरांत भी जीवन पर्यन्त चलता रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं (अंतःशक्ति) को यथार्थ बनाने की एक प्रक्रिया है। शिक्षा वह प्रकिया है जिससे व्यक्ति अपनी क्षमताओं व योग्यताओं का वर्धन करता है तथा स्वयं में विकसित होता है। बच्चे का शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक योग्यताओं का सांमंजस्यपूर्ण विकास करके शिक्षा प्रत्येक बच्चे में एक समन्वित व्यक्तित्व को जन्म देती है।

मानव विलक्षण रूप से बहुत सारी योग्यताओं से सम्पन्न है। मानव के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक पक्ष ही उसे अन्य जीवों से अलग दर्शाते है अन्य जीवों के विपरीत मानव में यह योग्यता होती है कि वह सीख सकता है तथा शिक्षित हो सकता है। शिक्षा से मानव जाति का अस्तित्व बना हुआ है। इसी से वह अपनी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को स्थिर रखे हुए है और शिक्षा से ही व्यक्ति को एक ऐसी प्रबुद्ध सभ्यता के विकास में सहायता मिलती है जिसका कालांतर में इतिहास साक्षी रहा है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का तात्पर्य समस्त आंतरिक शक्तियों को बाहर लाने के प्रयास से है। इसी के परिणामस्वरूप शिक्षा का प्रारूप बालकेन्द्रित हो चुका है तथा व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था को उपयुक्त समझा जाने लगा है।

जे. एस. मेकेन्जी के अनुसार, "संकुचित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय हमारी शक्तियों के विकास एवं उन्नति के लिए चेतनापूर्वक किये गये किसी भी प्रयास से हो सकता है।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में, "अज्ञात के प्रति जिज्ञासा ही ज्ञान प्राप्ति का द्वार खोलती है।"

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम साधन है इसके द्वारा व्यक्ति के जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तथा दक्षताओं का उन्नयन किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से बच्चे के विभिन्न ज्ञान, अवबोध, कौशलों एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास कर उन्हें विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार अपने को समायोजित करने की योग्यता का विकास किया जाता है। शिक्षा से व्यक्ति में सम्पूर्णता तथा तार्किक क्षमताओं का विकास होता है।

गृह वातावरण

प्रकृति में जो कुछ भी विद्यमान है प्रत्येक उपस्थित वस्तु उस वातावरण से प्रभावित होती है फिर इस प्रकृति की सबसे अद्वितीय रचना बालक किस प्रकार से अछूता रह सकता है? बालक के उत्थान एवं पतन में घर (गृह) और वातावरण की जितनी भूमिका रहती है उतना सम्भवतः किसी अन्य वस्तु की नहीं। बच्चे का जन्म जिस घर में होता है उस घर का वातावरण सीधा बच्चे को प्रभावित करता है। मानव की उत्पत्ति ही प्रकृति के अनुरूप परिवर्द्धन के फलस्वरूप मानी जाती है। बच्चे के गर्भ में आने के समय से लेकर अन्त तक वह जिन परिस्थितियों और जिस प्रकार के वातावरण में रहकर अपने सभी क्रियाकलाप करता है उन परिस्थितियों एवं वातावरणों की छाप उसके

जीवन को प्रभावित करती चली जाती है और उन्ही के अनुसार बालक का व्यक्तित्व ढ़लता चला जाता है अतः हमें बालक के पालन पोषण में सर्वाधिक महत्व घर (गृह) और वातावरण को देना चाहिए।

गृह–वातावरण से आशय घर में निवासरत परिवार के उन सभी सदस्यों द्वारा निर्मित की जाने वाली परिस्थितियों से हैं जो बालक की विभिन्न ज्ञान की इन्द्रियों को प्रत्यक्षतः प्रभावित करती है और बालक उन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित होकर, सीखकर और देखकर दूसरों के समक्ष क्रिया प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के (Personality) पर्सनालिटी शब्द का पर्याय है। अंग्रेजी शब्द (Personality) लैटिन भाषा के पर्सोना (Persona) शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ, बाहरी नकाब या वेशभूषा । इस प्रकार Personality की Personal शब्द से उत्पत्ति यह प्रकट करती है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके बाह्य गुणों से मापा जाता है, परन्तु व्यक्तित्व का यह अर्थ एकांगी है। यद्यपि बाह्य गुणों का व्यक्ति के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण योगदान है, किन्तु केवल बाह्य गुणों को ही व्यक्तित्व नहीं कहा जा सकता। व्यक्तित्व में उसके संवेग, आचार, विचार, सिद्धांत, मनोवृत्ति, व्यवहार क्रियाएं, रूचि, अभिरूचि और बुद्धि सभी कुछ समाहित है। इस प्रकार व्यक्तित्व में व्यक्ति की आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की क्रियाओं का संगठन सम्मिलित है। व्यक्तित्व, जहाँ व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों, यानी बाहरी रूप–रंग, डील–डौल, आकर्षण तथा आन्तरिक शीलगुणों का गत्यात्मक संगठन है, वहीं व्यक्तित्व विकास व्यक्ति के व्यक्तित्व पैटर्न का विकास है, यानि उन सभी मनोदैहिक तंत्रों का विकास है जिनसे व्यक्ति का व्यक्तित्व बना होता है तथा जो आपस में अंतर्संबंधित होते है और एक–दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं।

व्यक्तित्व विकास के क्रम में मूलतः व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय तथा शीलगुण में विकासात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं एवं इन्हें व्यक्ति के जैविक, सामाजिक व सांस्कृतिक कारक प्रभावित करते है।

मिसेल (1981), ने व्यक्तित्व को व्यवहारवादी दृष्टिकोण से परिभाषित करते हुए लिखा है, ''प्रायः व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यवहार के इस विशिष्ट पैटर्न (जिसमें चिन्तन एवं संवेग भी सम्मिलित हैं) से होता है जो प्रत्येक व्यक्ति की जिन्दगी की परिस्थितियों के साथ होने वाले समायोजन का निर्धारण करता है।''

समायोजन

समायोजन शब्द मानव व्यवहार के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक रूप से प्रयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण सम्प्रत्यय है जो मानव के व्यवहार को अच्छे प्रकार से या सुव्यवस्थित ढंग से पूरा करने में सहायक सिद्ध होता है। इस प्रकार समायोजन का सम्बन्ध सुव्यवस्थित तरीके से परिस्थितियों के सापेक्ष या अनुकूल व्यवहार करने की एक प्रक्रिया से है, अर्थात् समायोजन वह युक्ति है जिसके अंतर्गत व्यक्ति स्वयं की जरूरतों और इन जरूरतों को पूर्ण करने हेतु प्रभावित करने वाले कारकों में सामंजस्य बनाए रखता है। समायोजन शब्द की उत्पत्ति– सम+आयोजन। सम् का अर्थ है– भली भाँति, सुनियोजित रूप से। आयोजन का अर्थ है– व्यवस्था करना या देना अर्थात् अच्छी तरह से व्यवस्थित करना। अतः समायोजन से तात्पर्य, सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को अपनाना जिससे कि व्यक्ति या मानव की आवश्यकताएं पूरी हो सकें और उनके अंदर मानसिक द्वन्द न उत्पन्न होने पाये।

समायोजन शब्द का तात्पर्य सामान्यतया अनुकूलन से, व्यवस्था से, परिवर्तन से, अनुरूप या समतुल्य से होता है। समायोजन को सामंजस्य व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं।

शेफर के अनुसार, ''समायोजन वह संबंध है जो जैविक विरासत या जीव पर्यावरण और व्यक्तित्व के बीच स्थापित होता है।''

शोध के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, निवास एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, निवास एवं इनकी अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

$\mathbf{H_{01}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

$\mathbf{H_{03}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, निवास एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

$\mathbf{H_{04}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, निवास एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

परिसीमांकन

क्षेत्र की दृष्टि से: जिला ग्वालियर में संचालित 20 शहरी एवं 20 ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 800 शिक्षणार्थियों को लिया है।

विद्यार्थियों के दृष्टि से: शिक्षणार्थियों के रूप में केवल कक्षा 11वी के 400 छात्र एवं 400 छात्राओं को शोध अध्ययन हेतु परिसीमित किया गया है।

विद्यालयों के दृष्टि से: जिला ग्वालियर में संचालित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक परिसीमित किया गया है।

जनसंख्या की दृष्टि से: जिला ग्वालियर के शासकीय विद्यालयों में विभिन्न संकायों में अध्ययनरत कक्षा 11वी के विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या में सम्मिलित किया गया है।

शोध का अभिकल्प एवं विधि

उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अप्रयोगात्मक शोध विधि के अंतर्गत मात्रात्मक शोध के अधीन वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है तथा शोध अभिकल्प के रूप में अनुभागीय शोध अभिकल्प के अंतर्गत समूह तुलना विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

क्रम संख्या	निवास स्थान	विद्यालय संख्या		लिंग	योग
		छात्र	छात्राएं		
1.	शहरी क्षेत्र	20	200	200	400
2.	ग्रामीण क्षेत्र	20	200	200	400
3.	कुल योग	40	400	400	800

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

शोध उपकरण

क्रम सं	शोध उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता का नाम	प्रकाशन वर्ष	एकांश संख्या	प्रतिक्रिया अंकन
1.	गृह वातावरण आविष्कारिका	डॉ. के. एस. मिश्रा	2020	100	5 बिन्दु मापनी
2.	व्यक्तित्व अनुसूची (अन्तर्मुखी-बहिर्मुखी)	डॉ. यशवीर सिंह एवं एच. एम. सिंह	2017	56	2 बिन्दु मापनी
3.	विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए समायोजन आविष्कारिका	प्रो. ए.के.पी. सिन्हा एवं प्रो. आर. पी. सिंह	2021	60	3 बिन्दु मापनी

चर

अ. स्वतंत्र चरः गृह वातावरण, व्यक्तित्व, लिंग (छात्र, छात्राएं), आवास स्थान (शहरी, ग्रामीण)

ब. आश्रित चरः समायोजन (विद्यालयी वातावरण)

स. बहिरंग चरः शैक्षिक स्तर (11वीं कक्षा), शैक्षिक संस्था (शासकीय विद्यालय)

परिकल्पना परीक्षण

H_{01} उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी क्रमांक 1: गृह–वातावरण एवं लिंगभेद फलांकों के अंतःक्रिया की तुलना

क्र. सं.	स्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्गों का योग	माध्यों का वर्ग	एफ-अनुपात	परिणाम (.05 सार्थकता स्तर)
1	कारक A (गृह-वातावरण)	1	528.13	528.13	4.63	सार्थक (अस्वीकृत)
2	कारक B (लिंगभेद)	2	4462.14	2231.07	18.07	सार्थक (अस्वीकृत)
3	अंतक्रिया	2	1827.21	913.61	7.38	सार्थक (अस्वीकृत)
4	त्रुटि	794	98327.65	123.84		
5	कुल	799	105145.12	131.57		

व्याख्याः गणना से प्राप्त तीनों एफ–मानों की अर्थपूर्ण व्याख्या एफ–सारणी में 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए मानक मानों के सापेक्ष निम्नलिखित प्रकार है–

d.f. (1,794) के लिए मानक F.05 = 3.85, d.f. (2,794) के लिए मानक F.05 = 3.00

(अ) कारक A (गृह–वातावरण) के लिए F मान 4.63 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि तीनों स्तर (उच्च, मध्यम, निम्न) के गृह वातावरण के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर है।

(ब) कारक B (लिंग–भेद) के लिए F मान 18.07 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन में अंतर है अर्थात विद्यालयी समायोजन क्षमता लिंग से प्रभावित है।

(स) दोनों कारकों की अंतर्क्रिया के लिए F मान 7.38 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी समायोजन के लिए विद्यार्थियों का गृह वातावरण एवं लिंग–भेद सार्थक अंतःक्रिया कर रहे हैं।

H_{02} उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी क्रमांक 2: व्यक्तित्व एवं लिंगभेद फलांकों के अंतःक्रिया की तुलना

क्र. सं.	स्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्गों का योग	माध्यों का वर्ग	एफ-अनुपात	परिणाम (.05 सार्थकता स्तर)
1	कारक A (व्यक्तित्व)	1	528.13	528.13	4.03	सार्थक (अस्वीकृत)
2	कारक B (लिंगभेद)	1	144.25	144.25	1.10	असार्थक (स्वीकृत)
3	अंतक्रिया	1	1827.21	913.61	1.17	असार्थक (स्वीकृत)
4	त्रुटि	794	98327.65	123.84		
5	कुल	799	105145.12	131.57		

व्याख्या: गणना से प्राप्त तीनों एफ–मानों की अर्थपूर्ण व्याख्या एफ–सारणी में 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए मानक मानों के सापेक्ष निम्नलिखित प्रकार है:

d.f. (1,796) के लिए मानक F.05 = 3.85

(अ) कारक A (व्यक्तित्व) के लिए F मान 4.03 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रकार के व्यक्तित्व (बहिर्मुखी, अंतर्मुखी) के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर है।

(ब) कारक B (लिंग–भेद) के लिए F मान 1.10 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन में अंतर नहीं है अर्थात् विद्यालयी समायोजन लिंग से प्रभावित नहीं है।

(स) दोनों कारकों की अंतर्क्रिया के लिए F मान 1.17 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी समायोजन के लिए विद्यार्थियों का व्यक्तित्व एवं लिंग–भेद आपस में सार्थक अंतर्क्रिया नहीं कर रहे हैं।

H_{03} उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, निवास एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी क्रमांक 3: गृह–वातावरण एवं निवास फलांकों के अंतःक्रिया की तुलना

क्र. सं.	स्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्गों का योग	माध्यों का वर्ग	एफ-अनुपात	परिणाम (.05 सार्थकता स्तर)
1	कारक A (गृह-वातावरण)	1	119.35	119.35	0.93	असार्थक (स्वीकृत)
2	(निवास)	2	379.80	189.90	1.49	असार्थक (स्वीकृत)
3	अंतक्रिया	2	4601.41	2300.70	18.01	सार्थक (अस्वीकृत)
4	त्रुटि	794	101411.29	127.72		
5	कुल	799	106511.85	133.31		

व्याख्या: गणना से प्राप्त तीनों एफ–मानों की अर्थपूर्ण व्याख्या एफ–सारणी में 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए मानक मानों के सापेक्ष निम्नलिखित प्रकार है:

d.f. (1,794) के लिए मानक F.05 = 3.85

d.f. (2,794) के लिए मानक F.05 = 3.00

(अ) कारक A (गृह–वातावरण) के लिए F मान 0.93 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि तीनों स्तर (उच्च, मध्यम, निम्न) के गृह वातावरण के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर नहीं है।

(ब) कारक B (निवास) के लिए F मान 1.49 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर नहीं है अर्थात् विद्यालयी समायोजन क्षमता विद्यार्थियों के निवास क्षेत्र से प्रभावित नहीं है।

(स) दोनों कारकों की अंतर्क्रिया के लिए F मान 18.01 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी समायोजन के लिए विद्यार्थियों का निवास क्षेत्र एवं गृह वातावरण सार्थक अंतःक्रिया कर रहे हैं।

H_{04} उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, निवास एवं इनकी अन्तःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी क्रमांक 4: व्यक्तित्व एवं लिंगभेद फलांकों के अंतःक्रिया की तुलना

क्र. सं.	स्रोत	स्वतंत्रता अंश	वर्गों का योग	माध्यों का वर्ग	एफ-अनुपात	परिणाम (.05 सार्थकता स्तर)
1	कारक A (व्यक्तित्व)	1	90.45	90.45	0.70	असार्थक (स्वीकृत)
2	(निवास)	1	795.72	795.72	6.14	सार्थक (अस्वीकृत)
3	अंतक्रिया	1	1414.66	1414.66	10.92	सार्थक (अस्वीकृत)
4	त्रुटि	796	103115.12	129.54		
5	कुल	799	105415.12	131.93		

व्याख्याः गणना से प्राप्त तीनों एफ–मानों की अर्थपूर्ण व्याख्या एफ–सारणी में 0.05 सार्थकता स्तर पर दिए गए मानक मानों के सापेक्ष निम्नलिखित प्रकार हैः

d.f. (1,796) के लिए मानक F.05 = 3.85

(अ) कारक A (व्यक्तिव) के लिए F मान 0.70 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रकार के व्यक्तित्व (बहिर्मुखी, अंतर्मुखी) के विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर नहीं है।

(ब) कारक B (निवास) के लिए F मान 6.14 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है इसलिए यह कहा जा सकता है कि शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन में अंतर है अर्थात् विद्यालयी समायोजन क्षमता निवास क्षेत्र से प्रभावित है।

(स) दोनों कारकों की अंतःक्रिया के लिए F मान 10.92 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालयी समायोजन के लिए विद्यार्थियों का व्यक्तित्व एवं निवास–स्थान सार्थक अंतःक्रिया कर रहे हैं।

निष्कर्ष

H_{01} उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

कारक A (गृह–वातावरण)	सार्थक (अस्वीकृत)
कारक B (लिंगभेद)	सार्थक (अस्वीकृत)
अंतःक्रिया	सार्थक (अस्वीकृत)

$\mathbf{H_{02}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

कारक A (व्यक्तित्व)	सार्थक (अस्वीकृत)
कारक B (लिंगभेद)	असार्थक (स्वीकृत)
अंतःक्रिया	असार्थक (स्वीकृत)

$\mathbf{H_{03}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर गृह–वातावरण, निवास एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

कारक A (व्यक्तित्व)	असार्थक (स्वीकृत)
कारक B (निवास)	असार्थक (स्वीकृत)
अंतःक्रिया	सार्थक (अस्वीकृत)

$\mathbf{H_{04}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर व्यक्तित्व, निवास एवं इनकी अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं है।

कारक A (व्यक्तित्व)	असार्थक (स्वीकृत)
कारक B (निवास)	असार्थक (स्वीकृत)
अंतःक्रिया	सार्थक (अस्वीकृत)

सन्दर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन (1990) *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन.* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. अस्थाना, मधु एवं वर्मा, किरणवाला (2015) *व्यक्तित्व मनोविज्ञान.* मोतीलाल बनारसी दास, पटना।
3. ओड, लक्ष्मीकांत (1995) *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि.* हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।
4. कुमार, रणजीत (2014) *रिसर्च मेथोडॉलजी.* एस. ए. जी. ई. पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. गुप्ता, एस पी (2014) *अनुसंधान संदर्शिका.* शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
6. शर्मा, आर ए (2009) *शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया.* आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

****